देवी-देवताओंकी उपासना : खण्ड १

श्री हनुमान

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवताओंसंबंधी जो थोडी-बहुत जानकारी रहती है, वह बचपनमें पढी-सुनी कहानियोंसे होती है । ऐसी अल्प जानकारीसे लोगों का भगवानके प्रति विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासंबंधी अधिक जानकारी मिले, तो अधिक विश्वास निर्मित होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपांतर आगे श्रद्धामें होता है एवं इससे देवताकी उपासना और साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रंथमें हनुमानसे संबंधित, प्रायः अन्यत्र न पाई जानेवाली उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी दी है ।

卐 卐

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि लघुग्रंथको पढकर प्रत्येक व्यक्तिको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले ! – **संकलनकर्ता**

卐 卐

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

卐 **आध्यात्मिक परिभाषामें प्रस्तावना** ५

卐 **हनुमानजीके विवेचनका महत्त्व** ८

卐 **भूमिका** ९

१. **जन्मका इतिहास** ११

२. **कार्य एवं विशेषताएं** १२

* सर्वशक्तिमान * महापराक्रमी १२

* भक्त * अविरत सतर्कता १४

* मनौती पूर्ण करनेवाले * चिरंजीवी १७

३. मूर्तिविज्ञान २०

४. संतोंद्वारा कथित हनुमानका महत्त्व २४

५. उपासना २५

* हनुमानजीको तेल, सिंदूर तथा मदारके पत्र-पुष्प क्यों अर्पित करने चाहिए ? ३२

* हनुमानजीको नारियल क्यों एवं कैसे अर्पित करना चाहिए ? ३३

* कालानुसार आवश्यक उपासना ३८

  * समाजमें धर्मशिक्षाका प्रसार करें ! ३९

  * देवालयोंकी पवित्रता बनाए रखना एवं उस विषयमें लोगोंका प्रबोधन करना ! ४१

  * हनुमानजीसे करनेयोग्य कुछ प्रार्थनाएं ४५

६. हमारे जीवनमें हनुमान ४६

हनुमानसंबंधी गहन ज्ञान ४७